

■ लोग पेंटिंग की बात करते हैं, उससे मिले पैसे की बात भी बहुत होती है। लोग ये सोचकर हैरान होते हैं कि एक पेंटिंग के इतने सारे पैसे, लेकिन वे ये नहीं सोचते कि यहां तक पहुंचने के लिए एक कलाकार ने कितना श्रम किया है, कितनी साधना की है। मैं उन्हें बताना चाहता हूं कि पेंटिंग पैसे के लिए नहीं होती, मोहब्बत के लिए होती है। 1948 में जब मैंने पेंटिंग शुरू की थी तब किसी पेंटिंग के सौ रुपए मिल जाएं तो बड़ी बात होती थी। कभी सोचा नहीं था, किसी पेंटिंग के इतने पैसे भी मिल सकते हैं।

पेंटिंग मोहब्बत है कारोबार नहीं

■ शकील भोपाल। पेंटिंग मोहब्बत है

कारोबार नहीं, यह बात पेरिस में रह रहे मशहूर आर्टिस्ट सैयद हैदर रजा ने सोमवार को एक अनौपचारिक बातचीत में कही। श्री रजा 1978 के बाद भोपाल आए हैं। पेरिस में रहकर भी देश और माटी की याद को ताजा करने की गरज से श्री रजा हर साल भारत आते हैं। बुजुर्ग आर्टिस्ट रजा बताते हैं - अक्टूबर 1959 में पेरिस गया। पेरिस मुझे बहुत लुभाता था वहां जाकर पेंटिंग करने में मजा भी बहुत आया। वहां रहकर फ्रांसीसी भी सीखी, छः साल तक खूब मेहनत की। भरपूर कामयाबी के बावजूद लगा कहीं कुछ कमी है, अपने काम में देश की छाप जो नजर नहीं आ रही थी, यहां की संस्कृति नहीं थी, विजन नहीं नजर आ रहा था। सोचता था क्या करूं कि मेरे काम में भारत झलके।



यहां आया मंदिरों में गया, जंगलों में गया, स्तूप देखे, अजंता एलौरा देखे, श्रीमदभागवत गीता पढ़ी दूसरी किताबें भी पढ़ीं। बिंदु पर रिसर्च की उस पर काम किया, नाग कुंडलिनी

रजा करेंगे फ्यूजन का शुभारंभ

भोपाल। भारत भवन के सहयोग से रंगायन आर्ट गैलरी द्वारा फ्यूजन चित्रकला प्रदर्शनी का आयोजन मंगलवार की शाम से भारत भवन की रंगदर्शनी दीर्घा में किया



जा रहा है। मशहूर कलाकार सैयद हैदर रजा इस प्रदर्शनी का शुभारंभ करेंगे। 6 फरवरी तक चलने वाली इस चित्रकला प्रदर्शनी में तीन पीढ़ियों के चित्रकारों का काम प्रदर्शित होगा। इस प्रदर्शनी में विशेष रूप से भोपाल के वरिष्ठ और युवा चित्रकारों का काम एक जगह पर देखा जा सकता है। उद्घाटन शाम पांच बजे होगा।

पर काम किया। इतना करने पर ऐसा कर पाया, जिससे मेरे चित्रों में भारतीय रस नजर आने लगा। लोगों ने कहा भी रजा को ये क्या हो गया है बिंदु पर काम कर रहा है, लेकिन बाद में मेरे काम ने साबित किया कि मैं ठीक राह पर था। पेरिस में रहकर हिंदी बोलता हूं संस्कृत के श्लोक सुनाता हूं तो लोग हैरत करते हैं। अपना धर्म नहीं छोड़ा, लेकिन सभी धर्मों के ग्रंथ पढ़ता हूं। उनसे सीखता भी हूं। मुझे तो समझ में नहीं आता लोग धर्म के नाम पर लड़ते क्यों हैं।

पेरिस बहुत खुबसूरत है वहां के लैंडस्केप पर काम करना मुझे बहुत भाता है, मैंने इन पर बहुत काम किया है। मैं बहुत जिददी आदमी हूं, जो ठान लेता हूं करके ही रहता हूं, खामोशी से काम करना पसंद है। बस एक धुन रहती है अच्छा और सिर्फ अच्छा काम करूं, अच्छी पेंटिंग बनाऊं। अपने गुरु बेनी प्रसाद स्थापक के प्रति गहरा श्रद्धा भाव दर्शाते हुए बुजुर्ग कलाकार कहते हैं। जो कुछ सीखा उन्होंने से सीखा, आज जिस भी मकाम पर हूं उन्हीं की बंदीगत हूं। भोपाल होकर दमोह जा रहा हूं जहां उनका स्मारक बनवाने वाला हूं। श्री रजा कहते हैं युवा जल्दी से सफलता चाहते हैं लेकिन न तो ऐसा होता है न इसकी कोई जरूरत है। नई पीढ़ी को मेरी सलाह है पैसे के पीछे नहीं भागें इससे उनकी कला को नुकसान होगा। रिसर्च करें, दिल लगाकर काम करें, पैसा अपने आप आ जाएगा। नए लोगों का जिक्र करने पर श्री रजा बोले अखिलेश, मनीष पुस्कले, सीमा घुरैया, सुजाता बजाज, स्मृति दीक्षित और संजू जैन अच्छा काम कर रहे हैं। रजा कहते हैं। 1948 में कुछ पेंटर दोस्तों के साथ मिलकर प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप बनाया था, मिलकर मुंबई में दस साल काम किया। इस ग्रुप में मकबूल फिदा हुसैन भी थे। उनके बारे में पछने पर बोले कि किसी कंट्रोवर्सी में पड़े बिना हुसैन के काम पर सिर्फ यही कहना चाहता हूं कि उनका काम सिनिप्रिंकेंट है, बहुत अच्छा है और अफसोस है कि वे विदेश में हैं।